तकनीकी संकटका दंश

दुनिया जितनी तेजीसे डिजिटल होती जा रही है, उतनी ही तेजीसे उसकी निर्भरता कुछ बड़ी प्रौद्योगिकी कम्पनियोंपर बढ़ती जा रही है। शुक्रवारको माइक्रोसाफ्टकी सेवाओंमें आयी तकनीकी गड़बड़ीने एक बार फिर इस निर्भरताके खतरोंको उजागर कर दिया है। सर्वरमें खराबीके कारण ७४ देशोंमें माइक्रोसाफ्टकी सेवाएं प्रभावित हुईं। इसका असर सरकारी विभागों, बैंकों, अदालतों, विमानन सेवाओं और उद्योगोंके कामकाजपर पड़ा। माइक्रोसाफ्ट ३६५, आउटलुक टीम्स और कोपायलट जैसी सेवाओंके ठप होनेसे करोड़ों लोगोंको परेशानी उठानी पड़ी। यह घटना डिजिटल व्यवस्थाकी विश्वसनीयतापर गम्भीर सवाल खड़ा करता है। इस घटनाका सबसे चिन्ताजनक पहलू यह है कि एक कम्पनीके सर्वरमें आयी तकनीकी खराबीने दुनियाके अनेक देशोंकी सामान्य गतिविधियोंको प्रभावित कर दिया। भारत सहित अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलियामें भी इसका असर दिखायी दिया। विमानन सेवाओंमें देरी हुई और संस्थानोंका नियमित कामकाज बाधित हो गया। इससे स्पष्ट है कि डिजिटल तकनीकने सुविधाएं तो बढ़ायी हैं, लेकिन इसके साथ ही निर्भरताका जोखिम भी पैदा किया है। जिस व्यवस्थाको समय और श्रम बचानेका माध्यम माना गया, वही व्यवस्था बाधित होनेपर कामकाज ठप करनेका कारण बन सकती है। कम्पनीने इस समस्याके पीछे साइबर हमलेके बजाय तकनीकी गड़बड़ीको कारण बताया है, लेकिन इससे समस्याकी गम्भीरता कम नहीं होती है। जब करोड़ों उपयोगकर्ता और हजारों संस्थान किसी एक सेवा प्रदातापर निर्भर हों तो उसकी छोटी-सी चूक भी वैश्विक संकटका गम्भीर रूप ले सकती है। ऐसेमें केवल सेवाएं बहाल करना पर्याप्त नहीं है। गड़बड़ीके कारणोंकी समीक्षा और भविष्यमें इसकी पुनरावृत्ति रोकनेके उपाय भी जरूरी हैं। भारत जैसे तेजीसे बढ़ते देशके लिए यह घटना एक सबक है। सरकारी संस्थानों, बैंकों, न्यायालयों और विमानन कम्पनियोंको एक ही तकनीकी मंचपर निर्भर रहनेके बजाय वैकल्पिक व्यवस्था विकसित करनी चाहिए। सुरक्षित आंकड़ा भण्डारण, स्थानीय बैकअप और आपातकालीन संचालनकी व्यवस्था अनिवार्य होनी चाहिए। डिजिटल विकासका अर्थ केवल नयी तकनीक अपनाना नहीं, बल्कि उसे सुरक्षित और भरोसेमंद बनाना भी है। तकनीक मनुष्यकी सुविधाका माध्यम होनी चाहिए उसकी विवशताका नहीं। माइक्रोसाफ्टकी घटनासे सबक लेकर डिजिटल व्यवस्थाको और अधिक मजबूत और आत्मनिर्भर बनानेकी दिशामें गम्भीर प्रयास करने होंगे।

प्रतिबन्ध नहीं, प्रत्यर्पण

मलयेशियामें रह रहे भगोड़े इस्लामी उपदेशक जाकिर नाइकके नेतृत्व वाले रिसर्च फाउंडेशन (आईआरएफ) पर प्रतिबन्ध पांच वर्षके लिए बढ़ा दिया गया है। वैमनस्यता और साम्प्रदायिक विचारधाराकी पोषक इस संघटनपर प्रतिबन्धकी सीमा १४ नवम्बरको समाप्त हो रही थी। आईआरएफपर प्रतिबन्धकी सीमा बढ़ाना केन्द्र सरकारकी आतंकवाद एवं राष्ट्रविरोधी गतिविधियोंके प्रति जीरो टालरेंसकी नीतिके प्रति दृढ़ताको दर्शाता है। स्वराष्ट्र मंत्रालयके अनुसार यह संघटन भारतविरोधी गतिविधियोंमें शामिल रहा है। इसपर साम्प्रदायिक घृणा फैलानेके साथ ही आतंकवादको बढ़ावा देनेका आरोप है। आईआरएफका मूल उद्देश्य अलगाववादी विचारधाराका प्रचार करना और हिंसात्मक घटनाओंके बलबूते देशका माहौल खराब करनेके साथ ही फरार और बिखरे आतंकियोंको फिरसे संघटित करना रहा है, जो भारतकी शान्ति, सद्भाव और सम्प्रभुताके लिए बड़ा खतरा बन चुका है। आईआरएफपर प्रतिबन्धकी समय-सीमा बढ़ाना स्वराष्ट्र मंत्रालयका कदम उचित और सामयिक है लेकिन एक यक्ष प्रश्न अब भी जेहनमें उठ रहा है कि क्या प्रतिबन्धकी समय-सीमा बढ़ा देनेसे 'जीरो टालरेंस' की प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदीकी नीतिके सार्थक परिणाम सामने आ सकेंगे ? आज स्थिति यह है कि आईआरएफसे जुड़े अनेक आतंकी संघटन देशके विभिन्न हिस्सोंमें सक्रिय हैं। जरूरत है इन टुकड़े-टुकड़े आतंकी संघटनोंपर अंकुश लगानेकी, जिन्हें विदेशोंसे फण्डिंग होती है। जाकिर नाइकके प्रत्यर्पणके लिए गम्भीरतासे प्रयास किया जाना चाहिए। हालांकि मलयेशियाकी सरकारसे उसके प्रत्यर्पणकी बात चल रही है लेकिन अबतक कोई प्रगति नहीं हुई, जो चिन्ताकी बात है। अभी कुछ ही महीने पहले मलयेशियाके राष्ट्रपति अनवर इब्राहिमने भारत यात्राके दौरान जाकिर नाइकके प्रत्यर्पणका भरोसा दिया था लेकिन साथ ही इसमें समय लगनेकी बात भी कही थी। भारतको उसके प्रत्यर्पणका प्रयास लगातार जारी रखना चाहिए और वैश्विक स्तरपर दबाव बनानेकी कोशिश भी की जानी चाहिए।

लोक संवाद

जीवनशैलीमें सुधारकी जरूरत

महोदय,- आज हमारी गलतियोंके कारण बहुत-सी जानलेवा बीमारियोंका दायरा बढ़ता जा रहा है। इन्हींमेंसे एक बीमारी है डायबिटीज जिसे मधुमेह भी कहा जाता है। दुनियाभरमें बढ़ते मधुमेहके आंकड़ोंपर चिन्ता करते हुए इंटरनेशनल डायबिटीज फाउंडेशनने डायबिटीज रोकथाम दिवस मनानेका फैसला वर्ष १९९१ में किया था। डायबिटीजका कहर खान-पान और जीवनशैलीकी तरफ ध्यान देकर रोका जा सकता है। इस बीमारीके शिकार युवा भी हो रहे हैं। यह बीमारी हमारे देशमें भी तेजीसे बढ़ती जा रही है। इस बीमारीका मुख्य कारण गलत खानपान और जीवनशैली भी है। इसलिए जीवनशैलीको दुरुस्त करनेकी सख्त जरूरत है। **-राजेश कुमार, वाया ईमेल।**

बढ़ता बैंक ऋण चिन्ताजनक

हालमें मौद्रिक नीति समीक्षाके दौरान आंतरिक चर्चामें आरबीआईके गवर्नर संजय मल्होत्राने कहा था, इसी तरह मुद्रा एवं ऋण संबंधी आंकड़ोंमें वृद्धिको देखते हुए मांग पक्षसे जुड़ी चुनौतियां बनी हुई हैं। सार्वजनिक चर्चाओंसे कुछ समयतक दूर रहनेके बाद नकदीकी मात्रा फिर अहमियत बटोरने लगी है।

❐ टी. प्रसन्ना

आरबीआई स्वयं ब्याज दरें तय करता है और मुद्रास्फीतिका लक्ष्य निर्धारित करता है तो क्या हमें इसपर ध्यान देना चाहिए। भारतमें इसका जवाब हां है। आंकड़े इसकी वजह बताते हैं। व्यापक मुद्रा (ब्रॉड मनी जिसे एम३ भी कहा जाता है) में मुख्य रूपसे नकदी और बैंक जमा शामिल होते हैं। वर्ष २०२४-२५ में इसकी वृद्धि दर लगभग ९.३ फीसदी थी जो २०२५-२६ में बढ़कर १५.३ फीसदी हो गयी। इसी दौरान नॉमिनल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में नौ फीसदीसे भी कमकी वृद्धि हुई। १५ अक्तूबरको सालाना मुद्रा वृद्धिकी दर १६ फीसदीपर थी। हमारे आंकड़ोंके मुताबिक मार्चमें व्यापक मुद्रा जीडीपीका लगभग ९१ फीसदी थी और सितंबरतक (अनुमानित जीडीपीके आधारपर) यह लगभग ९३ फीसदी हो गयी। १८ महीने पहले यह अनुपात लगभग ८६ फीसदी था। यह आयके मुकाबले मुद्राके काफी बड़े विस्तारको दर्शाता है। हालांकि नीति-निर्माणमें मुद्रा आपूर्तिमें वृद्धिको एक स्वतंत्र भूमिका देनेके खिलाफ एक गम्भीर तर्क भी मौजूद है। हालमें नोबेल पुरस्कार जीतने वाले अर्थशास्त्रियों से जुड़े नव कीनेसियन ढांचेके मुताबिक खर्चका स्तर वर्तमान और भविष्यकी वास्तविक ब्याज दरोंपर निर्भर करता है। वास्तविक दरका मतलब है नॉमिनल दरमें अनुमानित मुद्रास्फीति घटा देना। जब वास्तविक दर कम होती है तो लोग अधिक खर्च करनेके लिए प्रेरित होते हैं और भविष्यके लिए उपभोग टालनेकी वजह कम हो जाती है। जब कीमतें धीरे-धीरे समायोजित होती हैं तो बढ़ती मांग अंतत: मुद्रास्फीति ऊपर धकेल देती है। इस नजरियेसे देखें तो मौद्रिक नीति ब्याज दरों, लोगोंकी उम्मीदों और वित्त पोषणकी स्थितियोंके जरिये काम करती है। यदि इन माध्यमोंसे नीतिगत रुख स्पष्ट हो जाता है तो केन्द्रीय बैंकको अलगसे मुद्रा आपूर्ति लक्षित करनेकी जरूरत नहीं पड़ती। मुद्रा आपूर्तिमें विस्तार इसलिए भी हो सकता है कि बैंक अधिक कर्ज देते हैं और नयी जमा जुटाते हैं। इस तरह यह किसी स्वतंत्र कारणके बजाय आर्थिक फैसलोंका एक परिणाम बन जाता है। साथ ही वित्तीय नवाचारोंके मुद्राको परिभाषित करना मुश्किल हो गया है और केन्द्रीय बैंक भी व्यापक मुद्राको पूरी तरह सटीक रूपसे नियंत्रित नहीं कर सकता।

इसके अलावा बैंक भंडार बनानेसे अतिरिक्त ऋणकी गारंटी नहीं मिलती। बैंक तरल परिसंपत्तियोंको इसलिए रोक सकते हैं कि उन्हें नुकसानका डर होता है, पूंजीकी कमी होती है या उन्हें ऋण देने योग्य ग्राहक नहीं मिल पाते। कर्जधारक नये ऋण लेनेके बजाय पुनर्भुगतानको प्राथमिकता दे सकते हैं। वैश्विक वित्तीय संकटके बाद अमेरिकी अनुभव यह दर्शाता है कि भंडार निर्माणका सीधा असर मुद्रा, ऋण या मुद्रास्फीतिपर नहीं पड़ता।

उल्लेखनीय है कि यह नीति-निर्माताओंकी सही ब्याज दर निर्धारित करनेकी क्षमतापर अत्यधिक भरोसा दिखाता है। नॉमिनल दर प्रतिबंधात्मक प्रतीत हो सकती है जबकि अपेक्षित मुद्रास्फीतिको ध्यानमें रखनेपर वह विस्तारवादी हो सकती है। जनताकी मुद्रा धारण करनेकी इच्छासे परे मुद्रामें निरन्तर वृद्धि व्यय और परिसंपत्तियोंकी खरीदके माध्यमसे समायोजनको प्रोत्साहित करती है। लिहाजा मुद्रा ऐसी जानकारी प्रदान करती है जो ब्याज दरोंके विश्लेषणसे नहीं मिल पाती। यह संबंध न तो तात्कालिक है और न ही यांत्रिक रूपसे आनुपातिक। वांछित मुद्रा रखने और व्ययकी गति भी बदलती रहती है। भारतके पास इस चेतावनीको गम्भीरतासे लेनेके दो कारण हैं। पहला, जब ऋण आवंटन पहले ही तेजीसे बढ़ रहा हो तो यह संभावना कम आश्वस्त करने वाली है कि अतिरिक्त नकदीका ऋण आवंटनसे सीधा संबंध नहीं रहता है। पिछले दिनों बैंक ऋण २२७.४३ लाख करोड़ रुपयेतक पहुंच गया, जो पिछले वर्षकी तुलनामें १८.२ फीसदीकी वृद्धि है जबकि एक वर्ष पहले यह वृद्धि ११.६ फीसदी थी। इससे यह सिद्ध नहीं होता कि भंडार निर्माणके कारण ही प्रत्येक अतिरिक्त ऋण दिया गया। इससे यह सिद्ध होता है कि हम प्रचुर नकदी भंडारके साथ बैंक ऋण आवंटनमें स्थिरता नहीं देख रहे हैं। मुद्रा और ऋण दोनों साथ बढ़ रहे हैं।

दूसरा और अधिक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि भारतमें व्यय, बचत और मूल्य निर्धारण प्रभावित करने वाली मुद्रास्फीतिकी अपेक्षाओंका पर्याप्त विश्वसनीय माप उपलब्ध नहीं है। घरेलू सर्वेक्षणकी अपेक्षाएं लगातार बादके राष्ट्रीय उपभोक्ता मूल्य सूचकांक-आधारित मुद्रास्फीतिसे अधिक रहती हैं। कुछ विसंगति परिवारोंकी विभिन्न उपभोग श्रेणियों को दर्शाती है। सर्वेक्षणमें होने वाले बदलाव अब भी जानकारियोंसे भरे हो सकते हैं परन्तु वास्तविक दरकी गणनाके लिए इन संख्यात्मक अपेक्षाओंका उपयोग करना अब भी समस्याग्रस्त है। रिपोर्ट की गयी मुद्रास्फीतिका अनुमान लगानेमें मदद करते हैं परन्तु वे वेतन संबंधी वार्ता, किराये, स्कूल फीस और अनुबंध नवीनीकरण नियंत्रित करने वाली अपेक्षाओंको समझनेका विकल्प नहीं हो सकते। ये निर्णय निर्धारित करते हैं कि अनुमानित मुद्रास्फीति भविष्यकी कीमतोंमें कैसे शामिल होती है। हमें बेहतर सर्वेक्षणों और अनुबंधोंसे सबूतोंकी जरूरत है जो सभी पक्षोंको भविष्यके भुगतानोंके लिए प्रतिबद्ध करते हैं। तब तक मौद्रिक भंडार सचाई टटोलनाका एक अहम जरिया प्रदान करते हैं। यहांतक कि जो व्यक्ति यह मानता है कि मुद्राकी कोई स्वतंत्र कारणात्मक भूमिका नहीं है उसे भी यह पूछना चाहिए कि क्या इसकी वृद्धि मुद्रास्फीतिके पूर्वानुमानोंमें सुधार करती है। भविष्यवाणीके लिए यह साबित करना आवश्यक नहीं है कि भविष्यवक्ता स्वतंत्र रूपसे परिणामका कारण बनता है। यदि मुद्रा वृद्धि मुद्रास्फीतिका अनुमान लगानेमें मदद करती है तो कार्य-कारण संबंध विवादित होनेके कारण इसकी अनदेखा करना उपयोगी जानकारीको खारिज करना होगा।

यह नये कीनेसियन ढांचेके अनुकूल है। यदि अपेक्षित मुद्रास्फीतिका त्रुटिपूर्ण निर्धारण किया जाता है तो वास्तविक दरका हमारा अनुमान गलत होगा। तीव्र मौद्रिक और ऋण वृद्धिसे पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता होनी चाहिए। क्या नीति नॉमिनल रीपो दरसे अधिक प्रोत्साहन प्रदान कर रही है। सभी मौद्रिक वृद्धि खतरनाक भी नहीं होती। एक बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाको अधिक धनकी आवश्यकता होती है और वित्तीय सुदृढ़ीकरण उच्च मुद्रा-जीडीपी अनुपातको उचित ठहरा सकता है। इससे आय वृद्धिसे कहीं अधिक विस्तार होने, जबकि वांछित मुद्राके व्यापक विस्तार नहीं होनेका प्रमाण मिलता है। भारतका ऐतिहासिक अनुभव बताता है कि जीडीपीका ८०.८४ फीसदी व्यापक मुद्राके लिए एक उपयोगी संदर्भ सीमा है, न कि वैज्ञानिक रूपसे स्थापित इष्टतम स्तर। धीरे-धीरे इस स्तरपर लौटनेके लिए मुद्रा वृद्धि नॉमिनल आय वृद्धिसे पीछे रखनी होगी बजाय कि अचानक मौद्रिक संकुचनके। रीपो दर प्रमुख जरिया बनी रहनी चाहिए और मुद्रास्फीति लक्ष्य। परन्तु मुद्रा वृद्धिको पूर्वानुमानों, अहम एवं सूक्ष्म बातों और संचारमें स्पष्ट स्थान मिलना चाहिए। जब अपेक्षाओंका सटीक आकलन न हो तो ब्याज दर ढांचेकी अधिक जांच-पड़तालकी आवश्यकता होती है।

बढ़ती हुई अर्थव्यवस्थाको अधिक धनकी आवश्यकता होती है और वित्तीय सुदृढ़ीकरण उच्च मुद्रा-जीडीपी अनुपातको उचित ठहरा सकता है। इससे आय वृद्धिसे कहीं अधिक विस्तार होने, जबकि वांछित मुद्राके व्यापक विस्तार नहीं होनेका प्रमाण मिलता है। भारतका ऐतिहासिक अनुभव बताता है कि जीडीपीका ८०.८४ फीसदी व्यापक मुद्राके लिए एक उपयोगी संदर्भ सीमा है, न कि वैज्ञानिक रूपसे स्थापित इष्टतम स्तर। धीरे-धीरे इस स्तरपर लौटनेके लिए मुद्रा वृद्धि नॉमिनल आय वृद्धिसे पीछे रखनी होगी बजाय कि अचानक मौद्रिक संकुचनके।

वैश्विक परिदृश्यमें भारतीय संस्कृतिका महत्व

भारतीय संस्कृतिका उद्भव इतिहासके जन्मसे भी पुराना है। सारी दुनियाके विद्वान और ज्ञान अभिलाषी भारतीय संस्कृति और धर्मसे प्रेरित रहे हैं। इस संस्कृतिके प्रतीक और प्रतिमान भारतके लिए स्वाभिमानका विषय हैं।

❐ हृदयनारायण दीक्षित

बीते ५ नवंबरको इण्डोनेशियाकी राजधानी जकार्तामें आयोजित यूनेस्कोकी ग्यारहवीं बैठकसे उत्साहवर्धक सूचना आयी है। इस बैठकमें भारतके महाकाव्य महाभारत, कौटिल्यका अर्थशास्त्र, कल्हड़की राजतरंगिणीकी प्राचीन पाण्डुलिपियोंको मेमोरी ऑफ दि वर्ल्ड एशिया रजिस्टरमें सम्मिलित करनेकी घोषणा की गयी है। इसके पहले २०२४ में रामचरितमानस, पंचतंत्र और सहृदयालोक लोचनको इसी सूचीमें शामिल किया गया था। दुर्भाग्यसे राजनीतिक कारणोंसे देशका वातावरण कलहपूर्ण हो गया है। भारत और भारतके मनको आनंदित करने वाली ऐसी सूचनाओंपर कोई उत्सव नहीं है। इस महत्वपूर्ण सूचनाको राष्ट्रीय विमर्श और आनन्दका विषय नहीं बनाया गया। अच्छा होता कि जनमानसमें भारतका राष्ट्रीय वैशिष्ट्याभिमान बढ़ाने वाली इस घोषणाकी चर्चा की जाती। तीनों ग्रंथ असाधारण रूपसे प्रतिष्ठित हैं। कौटिल्यका अर्थशास्त्र लगभग ३४० ईसापूर्वकी रचना है। यह दुनियाका प्राचीनतम अर्थशास्त्र है। भारतीय दर्शन और परम्पराको भाववादी बताने वाले पश्चिमी विद्वान और उनके समर्थक अर्थशास्त्रका भौतिकवाद नहीं देखते। कौटिल्यने अर्थशास्त्रकी शुरुआतमें ही शुक्राचार्य और बृहस्पतिको नमस्कार किया है। शुक्राचार्यके मतका उल्लेख भी हुआ है। अर्थशास्त्रकी सामग्री यथार्थवादी दर्शनसे भरी पूरी है। अर्थशास्त्रकी तुलना मेकियावली द्वारा लिखित 'प्रिंस' से की जाती है। राजपुत्रोंसे देशकी रक्षाका विषय मजेदार है। कहा गया है कि राजाको पुत्रोंकी गतिविधिपर ध्यान रखना चाहिए। ये केकड़ेकी तरह देशका नुकसान करते हैं। अर्थशास्त्रमें राजकोष, सैन्य संघटन, सीमा विस्तार और चुंगी जैसे करावानकी चर्चा है। बड़ी बात है कि कौटिल्यने अर्थशास्त्रमें राजव्यवस्थाके सभी अंगों और उद्देश्योंपर ईसाके ३५० वर्ष पहले ही सम्यक विचार कर लिया था।

महाभारतमें कुल लगभग १,१०,००० श्लोक हैं। एक लाखसे अधिक श्लोक होनेके कारण इसे शतसाहस्री संहिता भी कहा जाता है। इस ग्रंथका विकास तीन चरणोंमें हुआ था। महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित मूल ग्रंथ 'जय' में ८८०० श्लोक थे। महाभारतका संपादन लगातार होता रहा है। बादमें इसमें श्लोकोंकी संख्या २४००० हुई और यह 'भारत' कहलाया। अंतमें एक लाखसे अधिक श्लोक और १८ पर्व हो गये। यह 'महाभारत' के नामसे प्रसिद्ध हुआ। भारतीय दर्शनका प्रतिनिधि ग्रन्थ गीता महाभारतके भीष्म पर्वका ही हिस्सा है। महाभारतके इस हिस्सेको दुनियाके सैकड़ों विद्वानोंने बार बार पढ़ा है। गीता दर्शनके अलावा महाभारतमें राजनीति, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, इतिहास और धर्मशास्त्रपर तमाम सामग्री है। इसमें ऋग्वेदकी परम्परा है। उपनिषदोंका दर्शन है। पुराणोंका यथार्थ दार्शनिक भाववाद है। धर्मपर अनेक विचार हैं। ज्ञान और विवेकपूर्ण विमर्श है। यक्ष प्रश्नों वाला हिस्सा विवेकपूर्ण है। एक मजेदार प्रश्न है कि जीवन मार्ग क्या है-का: पंथा:। युधिष्ठिरका उत्तर है कि 'ऋषि अनेक हैं। वेद वचन भिन्न-भिन्न हैं। तर्कसे बात नहीं बनती। धर्मका तत्व गुहामें है। इसलिए महापुरुषों द्वारा अपनाया गया मार्ग ही सही मार्ग है। युधिष्ठिर धर्मराज होकर भी धर्मपर निर्णायक वक्तव्य नहीं देते। द्रौपदी जुएंके खेलमें अपमानित हुई थी। उसने आरोप लगाया कि इन राजाओंका धर्म भ्रष्ट हो गया है। भीम कहते हैं कि जुआं खेलना राजधर्म है। महाभारत कालजयी रचना है। दुनियाके सभी विचार इस महाकाव्यमें हैं।' राजतरंगिणी कश्मीरी पंडित कल्हण द्वारा १२वीं शताब्दीमें संस्कृत भाषामें रचित एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकाव्य है। इसका शाब्दिक अर्थ 'राजाओंकी नदी' होता है। यह ग्रंथ कुल आठ अध्यायों (तरंगों) में विभाजित है। प्रत्येक तरंग ज्ञानपूर्ण है। इसमें महाभारत कालसे लेकर कल्हणके समयतकके कश्मीरके राजाओंका क्रमबद्ध इतिहास दर्ज है। कल्हणने शिलालेखों और पुराने सिक्कोंके अध्ययनके आधारपर यह ग्रंथ लिखा था। यह पुस्तक केवल युद्धोंतक सीमित नहीं है, बल्कि तत्कालीन समाज, धर्म, संस्कृति और आम जनताकी दशापर भी प्रकाश डालती है। बिना किसी पक्षपातके राजाओंके गुणों और दोषोंका वर्णन करनेके कारण इसे भारतीय इतिहासका पहला प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है।

ग्रंथका दार्शनिक पक्ष भी इसके ऐतिहासिक विवरण जितना ही गहरा और प्रभावशाली है और तथ्य और ज्ञानसे भरीपूरी है। कल्हणने सत्ताके लिए होने वाले रक्तरंजित संघर्षोंके माध्यमसे जीवनकी नश्वरताको दर्शाया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि सांसारिक वैभव, राजपाट और अहंकार सब कुछ क्षणभंगुर हैं। इस महाकाव्यका मुख्य रस 'शांत रस' है। ये पाठकोंको वैराग्य और आत्मचिंतनकी ओर ले जाता है। कल्हणके अनुसार मनुष्यके कर्म ही उसके उत्थान और पतनका असली कारण बनते हैं। राजाओंके पतनकी कहानियां सुनाकर वे यह संदेश देते हैं कि धर्म और नैतिकता ही शाश्वत सत्य हैं। यह पुस्तक इतिहासके दर्पणमें जीवनके अंतिम सत्य और शांतिकी खोज करती है। अपने इसी गहरे दार्शनिक संदेशको पहुंचानेके लिए कल्हणने एक प्रभावशाली साहित्यिक शैलीका सहारा लिया है। साहित्यिक दृष्टिसे भी राजतरंगिणी संस्कृत काव्य परम्पराकी एक अनुपम कृति है। कल्हणकी लेखन शैली अत्यंत सरल, प्रवाहपूर्ण और हृदयस्पर्शी है। उन्होंने कठिन ऐतिहासिक तथ्यों और जीवनके गूढ़ सत्योंको रोचक बना दिया है। उनकी भाषामें अनावश्यक आडंबर नहीं है। विचारोंकी स्पष्टता और गहराई है। प्रकृति वर्णन, मानवीय संवेदनाओंका चित्रण है। सूक्तियोंका प्रयोग है। ग्रंथ सुंदर है। यह रचना इतिहासके रूखेपनसे मुक्त है। ग्रंथकी शैली उसे एक जीवंत और पठनीय महाकाव्यका रूप देती है। इसी प्रकार ऋग्वेद, रामचरितमानस, पंचतंत्र आदि ग्रंथ भी यूनेस्को द्वारा सम्मानित किये गये हैं। भारत स्वयंमें एक महाकाव्य है। भारतके लिए यह गौरवका विषय है। भारतको विश्वगुरु बिलावजह नहीं कहा जाता। ऐसे अनेक महाग्रंथ भारतमें हैं। उन्हें पढ़ना चाहिए। जांचना और जानना चाहिए कि भारतकी अभिव्यक्तिका विराट समूचे अस्तित्वको कैसे समाहित करता रहा है। इसका अंतरंग लोकमंगल से भरा पूरा है।



सूर्योपासनाका पर्व

❐ रघोत्तम शुक्ल

सूर्योपासनाकी कठिन चारदिनी उपासनाका महापर्व छठ है। सूर्यदेव पृथ्वीपर जीवनके आधार हैं। ज्योतिष ग्रंथोंके अनुसार शरीरांगोंमें उनका अधिकार मुखपर है। हर जातककी कुण्डलीमें वे लग्न, भाग्य और कर्म जैसे सबसे महत्वपूर्ण भावोंके कारक होते हैं। वे जगतके कर्ता, परम तेजोमय, सभी पापोंका नाश करने वाले ज्ञान-विज्ञान और मोक्ष भी प्रदान करने वाले मान्य हैं। वे हनुमान जीके गुरु हैं। उनसे ही शिक्षा पाकर हनुमान जी ज्ञानिनामग्रगण्यम् बने। वे पराक्रमके ऐसे भण्डार हैं कि सर्वश्रेष्ठ शस्त्रधारी श्रीरामको भी रावण वध करनेके लिए उनकी आराधना करनी पड़ी। श्रीरामने युद्ध भूमिमें ही आचमन लेकर तीन बार उस स्तोत्रका पाठ किया और फिर अति शक्ति सम्पन्न होकर रावणसे युद्ध करनेको उद्यत हुए। ऐसे सूर्य भगवानकी उपासनाका जब षष्ठी तिथिसे योग हो जाय तो उसका फल विशेष है। छहका अंक अपना महत्व रखता है। ज्ञानके भण्डार आदि ग्रंथ वेदोंके छह ही अंग हैं, शिक्षा, कल्प, निरुक्त, छंद, व्याकरण, ज्योतिष। प्रकृतिके रस भी छह ही हैं। भगवान शंकरके पुत्र देवताओंके सेनापति कार्तिकेय छह मुखों वाले हैं, जिनके सेनापतित्वमें देवता तारकासुरको मार सके। योग मार्गमें छठा चक्र आज्ञा चक्र होता है, जो दोनों भृकुटियोंके बीचका स्थान है। छठ मैया सूर्यदेवकी बहन मानी गयी हैं। लोक गीतोंमें कहा गया है, 'सूरज देव कै बहिनियां मैया, किरिन संग अंगना आय'। मान्यता है कि सूर्यदेवने अपनी इन बहनके घर आकर भोजन किया था। इस तिथिपर उनकी उपासना, व्रत, अनुष्ठानके विशेष फल हैं। मार्कण्डेय एवं ब्रह्मवैवर्त पुराणोंके अनुसार सृष्टि सृजन करते समय मूल प्रकृतिने अपनेको छह भागोंमें विभक्त किया। छठा भाग संतान प्रदाता एवं संतान रक्षक हुआ। यही छठ मैया हैं, जो ब्रह्मा जीकी मानस पुत्री हैं। कार्तिक शुक्ल छठका यह अनुष्ठान चार दिनी होता है, जो इस प्रकार मनाया जायगा। नहाय खाय-खरना-मुख्य छठ पूजा है। इस दिन व्रती दिनभर बिना अन्न जल उपवास रहेगा। घरमें ठेकुवा, चावलके लड्डू बनेंगे। सूपमें फल, ठेकुवा और पूजन सामग्री सजाकर सायंकाल व्रती जलाशयमें खड़े होकर पूजन और अस्ताचलगामी सूर्य देवको अर्घ्य देंगी। पारण- आगले दिन प्रात: सपरिवार व्रती पुन:जलाशयपर इकट्ठा होती हैं। व्रती जलमें खड़े होकर उदीयमान सूर्यको जलदान करके संतानप्राप्ति, रक्षाकी प्रार्थनाऔर व्रतकी पूर्णता करके पारण होता है। यह व्रतकी पूर्णता अथवा समापन होता है। सांतानिक व्रत होते हुए भी छठ माई अन्य सभी मनोकामनाएं पूर्ण करती हैं। पुराणोंके अनुसार आदिकालमें राजा प्रियव्रतने यह व्रत किया था। उनकी पत्नी मालिनी थीं। महर्षि कश्यपने उनसे पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया, जिससे संतान तो उत्पन्न हुआ, किन्तु मृत। इससे वे शोकमें डूब गये। तब वहां एक अद्भुत देवी प्रकट हुईं। राजाके पूछनेपर उन्होंने अपना परिचय छठ देवीके रूपमें बताया तथा स्वयंको ब्रह्मा जीकी मानस पुत्री कहते हुए प्रकृतिका छठा अंश प्रतिपादित किया।

कश्मीरमें सुरक्षाबलोंके लिए नयी चुनौती

❐ रोहित माहेश्वरी

जम्मू-कश्मीरमें हालमें घटी दो अलग-अलग और सनसनीखेज घटनाओंने एक बार फिर सुरक्षा व्यवस्थाको लेकर गम्भीर चिन्ताएं खड़ी कर दी हैं। पहली घटना दक्षिण कश्मीरके कुलगाम जिलेसे है, जहां ११ नवंबरको केन्द्रीय रिजर्व पुलिस फोर्सकी एक पेट्रोलिंग पार्टीको निशाना बनाकर हमला किया गया। इस हमलेमें सीआरपीएफके तीन जवान घायल हो गये थे। दूसरी घटना किश्तवाड़ जिलेके दूरदराज और घने जंगलों वाले दच्छन-मरवाह इलाकेसे सामने आयी, जहां स्थानीय पुलिसके स्पेशल आपरेशंस ग्रुपमें तैनात दो स्पेशल पुलिस अधिकारियोंकी गोली मारकर हत्या कर दी गयी। करीब चौबीस घंटेके भीतर हुई ये घटनाएं बताती हैं कि जम्मू-कश्मीरमें सुरक्षा हालात अब भी संवेदनशील बने हुए हैं। ५ अगस्त २०१९ को केन्द्र सरकार द्वारा अनुच्छेद ३७० को निरस्त करने और जम्मू-कश्मीरको दो केन्द्रशासित प्रदेशोंमें विभाजित करनेका फैसला भारतीय इतिहासके सबसे बड़े भू-राजनीतिक मोड़ोंमें गिना जाता है। इस कदमके बादसे घाटी और पूरे प्रदेशमें सुरक्षाके मोर्चेपर बड़े बदलाव आये हैं, लेकिन हालिया घटनाओंने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि आतंकवादका खतरा पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि उसके स्वरूपमें बदलाव आया है।

सरकारी आंकड़ोंके मुताबिक ५ अगस्त २०१९ से लेकर मध्य २०२६ के बीच आतंकवादी घटनाओं और सड़कपर होने वाले प्रदर्शनों (जैसे पत्थरबाजी) में लगभग ९० प्रतिशततककी भारी कमी आयी है। पिछले वर्षोंकी तुलनामें आतंकी वारदातोंमें करीब ७५ प्रतिशतसे अधिककी गिरावट दर्ज की गयी है। इस अवधिके दौरान सुरक्षा बलोंने बड़ी संख्यामें आतंकवादियोंको ढेर किया है। हालिया घटनाएं एक बार फिर याद दिलाती हैं कि सामान्य स्थिति और स्थायी शांतिके दावोंसे इतर इलाकेमें आतंकवादके रक्तबीज मौजूद हैं। दुखद ही है कि लापता होनेके एक दिन बाद दो स्पेशल पुलिस अधिकारियोंके गोलियोंसे छलनी शव बरामद हुए हैं। वहीं दूसरी ओर सीआरपीएफकी चेकपोस्टपर हुए हमलेमें तीन जवान घायल हुए हैं। निस्संदेह यह हमारी खुफिया एजेंसियों और सुरक्षाबलोंके लिए नयी चुनौती है। इन दोनों घटनाओंको अलग-अलग करके नहीं देखा जा सकता, क्योंकि इनके पीछे कई गहरे रणनीतिक संकेत छिपे हैं। लम्बे समयतक शांत रहे चिनाब घाटी (किश्तवाड़, डोडा) के घने जंगलों और दुर्गम पहाड़ियोंका इस्तेमाल आतंकी सुरक्षित पनाहगाहके रूपमें करनेकी फिराकमें हैं। एसपीओ और ग्राम रक्षा गार्ड स्थानीय भौगोलिक स्थिति और लोगोंसे भली-भांति परिचित होते हैं। इन्हें निशाना बनाकर आतंकी स्थानीय लोगोंमें खौफ पैदा करना चाहते हैं, ताकि सुरक्षाबलोंको जमीनी स्तरपर मिलने वाली खुफिया जानकारी बाधित हो सके। इन हमलोंकी चौतरफा निन्दा हुई है। ग्रेटर कश्मीरकी खबरके अनुसार, डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टीके अध्यक्ष गुलाम नबी आजाद सहित कई नेताओंने इन कायराना हरकतोंकी कड़ी आलोचना करते हुए आतंकवादके समर्थक नेटवर्कको पूरी तरह ध्वस्त करनेकी मांग की है।

उल्लेखनीय है कि इससे ठीक एक साल पहले राजधानीमें लाल किलेके पास एक कार धमाकेमें ग्यारह लोगोंकी जान चली गयी थी। कालांतर राष्ट्रीय जांच एजेंसी यानी एनआईएकी व्यापक जांचके बाद पता चला था कि विस्फोटकी घटनामें जम्मू-कश्मीर स्थित पुलवामाके एक डाक्टरकी मुख्य भूमिका रही थी। फिलहाल